# SYLLABUS

## Subject – Hindi

| Unit | Contents |
|---|---|
| UNIT – I | मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठः मातृभूमि (कविता) |
| | प्रेमचन्दः परिचय पाठः शतरज के खिलाड़ी (कहानी) |
| | व्यग्यः शरद जोशी जीप पर सवार इल्लियों<br>नियत कार्य - हिन्दी में षट्ऋतुओं के नाम लिखिए एवं अपनी रूचि अनुसार किसी एक ऋतु का विवेचन किजिए। |
| UNIT – II | वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम |
| | आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचय पाठः उत्साह (भावमूलक निबन्ध ) |
| | रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठः भारत एक है (संस्कृति ) |
| | आदिशंकराचार्य-जीवन व दर्शन<br>नियत कार्य - हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए तथा किसी एक कहानी की समीक्षा प्रस्तुत किजिए। |
| UNIT – III | पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द अनेक शब्द के लिए एक शब्द (हिन्दी व्याकरण) |
| | संधि और उसके प्रकार (हिन्दी व्याकरण)<br>नियत कार्य - f हिन्दी विधा के विविध पत्रों के प्रकारों का विवेचन किजिए एवं कोई एक औपराचिक पत्र लिखिए। |
| | बीज शब्द- धर्म, अद्वैत, भाषा, अवधारणा, उदारीकरण । |

renaissance

## Unit -1

# मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय

| | |
|---|---|
| **नाम** | मैथिलीशरण गुप्त |
| **जन्म** | 1886 ई. |
| **जन्म स्थान** | चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश |
| **मृत्यु** | 1964 ई. |
| **मृत्यु स्थान** | चिरगांव झांसी |
| **पिता का नाम** | सेठ रामचरण गुप्ता |
| **माता का नाम** | काशीबाई |
| **गुरु** | महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| **कृतियां** | भारत भारती, साकेत, यशोधरा, पंचवटी, द्वापर, जयद्रथ वध आदि |
| **नागरिकता** | भारतीय |
| **साहित्य में योगदान** | अपने काव्य में राष्ट्रीय भावों की गंगा बहाने का श्रेय गुप्ता जी को है। द्विवेदी युग के यह अनमोल रतन रहे हैं। |
| **मुख्य रचना** | साकेत |

**जीवन परिचय :-** राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी जिले के **चिरगांव नामक** स्थान पर **1886 ई.** में हुआ था। इनके पिता जी का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम काशीबाई था। इनके पिता को हिंदी साहित्य से विशेष प्रेम था, गुप्त जी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पड़ा। इनकी प्राथमिक शिक्षा चिरगांव तथा

माध्यमिक शिक्षा मैकडोनल हाईस्कूल (झांसी) से हुई। घर पर ही अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत एवं हिंदी का अध्ययन करने वाली गुप्त जी की प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले **वैश्योपकारक** नामक पत्र में छपती थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आने पर उनके आदेश, उपदेश एवं स्नेहमय परामर्श से इनके काम में पर्याप्त निखार आया। भारत सरकार ने इन्हें **पदमभूषण** से सम्मानित किया। **12 दिसंबर 1964** को मां भारती का सच्चा सपूत सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया

**साहित्यिक परिचय :-** गुप्ता जी ने खड़ी बोली के स्वरूप के निर्धारण एवं विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्ता जी की प्रारंभिक रचनाओं में इतिवृत्त कथन की अधिकता है। किंतु बाद की रचनाओं में लाक्षणिक वैचित्र्य एवं सुक्ष्म मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में प्रबंध के अंदर गीतिकाव्य का समावेश कर उन्हें उत्कृष्टता प्रदान की है। गुप्ता जी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं उनमें देव एवं दानव नहीं है। इनके राम,कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किए हुए पात्र हैं। इसलिए वे जीवन पर ना और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी तुलसी की भांति आराध्य नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं

**कृतियां (रचनाएं) :-** गुप्तजी ने लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों में भारत भारती (1912), रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया आदि उल्लेखनीय हैं।

**भारत भारती** मे हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जगाई। **रामचरितमानस** के पश्चात हिंदी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण **साकेत** है। **यशोधरा** और **साकेत** मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य की रचना की।

**भाषा शैली :-** हिंदी साहित्य में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान है। गुप्त जी की भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का सुंदर अद्भुत है।

वे गंभीर विषयों को भी सुंदर और सरल शब्दों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। इनकी भाषा में लोकोक्तियां एवं मुहावरे को के प्रयोग से जीवंतता आ गई है। गुप्तजी मूलत: प्रबन्धकार थे, लेकिन प्रबंध के साथ-साथ मुक्तक, गीति, गीतिनाट्य, नाटक आदि क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक सफलताएं की हैं। इनकी रचना **पत्रावली** पत्र शैली में रचित नूतन काव्य शैली का नमूना है। इनकी शैली में गेयता, प्रवाहमयता एवं संगीतत्मकता विद्यमान है।

**हिंदी साहित्य में स्थान :-** मैथिलीशरण गुप्त जी की राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका विशेष स्थान है। हिंदी काम राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा को बहाने का श्रेय गुप्तजी को ही हैं। अतः ये सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। इनके काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

राष्ट्रप्रेम गुप्त जी की कविता का प्रमुख स्वर है। भारत भारती में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश प्रेम ही इनकी पर्वती रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। उनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गांधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्य की कथावस्तु गुप्ता जी ने आज के जीवन से ना लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। यह अतीत की गौरव गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपना आते हैं।

## मृत्यु

मैथिलीशरण गुप्त जी पर गांधी जी का भी गहरा प्रभाव पड़ा था इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कारावास की यात्रा भी की थी। यह एक सच्चे राष्ट्र कवि भी थे। इनके काम हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। महान ग्रंथ **भारत भारती** में इन्होंने भारतीय लोगों की जाती और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जताई है। अंतिम काल तक राष्ट्र सेवा में अथवा काव्य साधना में लीन रहने वाले और राष्ट्र के प्रति अपनी रचनाओं को समर्पित करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 12 दिसंबर सन 1964 ईस्वी को अपने राष्ट्र को अलविदा कह गए।

मातृभूमि / मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।

हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?
पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥
फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥
निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥
शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥
सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते है॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥
क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।

भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥

प्रश्न 1.
धरती का परिधान क्या है?
उत्तर:
नीलांबर।

प्रश्न 2.
मातृभूमि का मुकुट क्या है?
उत्तरः
सूर्य और चंन्द्र मातृभूमि के मुकुट है।

प्रश्न 3.
मातृभूमि का करधनी क्या है?
उत्तरः
मातृभूमि का करधनी समुद्र है।

प्रश्न 4.
कौन मातृभूमि के स्तुति गीत गाते है?
उत्तरः
पक्षियों का समूह।

प्रश्न 5.
कवि अपनी मातृभूमि के लिए क्या करना चाहते हैं?

उत्तरः

कवि अपनी मातृभूमि के लिए आत्मसमर्पण करना चाहते हैं।

प्रश्न 6.

कवि कैसे बड़े हुए हैं?

उत्तरः

इस धरती की धूली में लोट-लोट कर बड़े हुए है।

प्रश्न 7.

कवि पैरों पर खडा रहना कैसे सीखा है?

उत्तरः

इस धरती में घुटनों के बल पर रेंगकर पैरों पर खड़ा रहना सीखा।

प्रश्न 8.

इसके रचनाकर कौन है? (आनंद बख्शी, कुँवर नारायण, मैथिलीशरण गुप्त, जगदीश गुप्त

उत्तरः

मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 9.

"रत्नाकर' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखें। (नदी, समुद्र, तालाब, नाला)

उत्तरः

समुद्र

प्रश्न 10.

मातृभूमि के आभूषण क्या-क्या हैं?

उत्तरः

नीलांबर, सूर्य-चन्द्र युग, रत्नाकर, नदियाँ, फूल तारे, खग – वृंद, शेषफन आदि मातृभूमि के आभूषण है।

प्रश्न 11

कवि की राय में भारवासियों की देह किससे बनी हुई है?

उत्तरः

मातृभूमि से/ मिट्टी से

प्रश्न 12

तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा? ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तरः

मातृभूमि माँ के समान है। जिस प्रकार माँ की ममता का प्रत्युपकार कर नहीं सकता है उसी प्रकार मातृभूमि का भी प्रत्युपकार हम नहीं कर सकते। मातृभूमि का स्थान हम मानव से भी श्रेष्ठ है।

प्रश्न 13.

मातृभूमि किसकी सगुण मूर्ति है? (ईश्वर की, माता की, गुरु की)

उत्तरः

ईश्वर की

प्रश्न 14.

मातृभूमि का मुकट क्या है?

उत्तरः

सूर्य और चंद्र

प्रश्न 15.

कवि मातृभूमि पर बलिहारी होता है। क्यों?

उत्तरः

मातृभूमि और प्रकृति में अटूट संबंध है। इसलिए कवि मातृभूमि को ईश्वर की सगुण मूर्ति मानता है और मातृभूमि पर बलिहारी होता हैं।

प्रश्न 16.

'मातृभूमि' किस युग की कविता है? (द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग)

उत्तरः

द्विवेदी युग

प्रश्न 17.

'धुलि' का समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढ़ें। (सनी, बनी, मिली)

उत्तरः

सनी

प्रश्न 18.

'तेरा प्रस्तुपकार कभी क्या हमसे होगा' – कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तरः

हमारा सबकुछ मातृभूमि से मिली है। यह देह, यह जीवन और अंत में हमें स्वीकार करनेवाला भी मातृभूमि है। इसलिए कवि ऐसा कहता है।

प्रश्न 19.

कवि एवं काव्यधारा का परिचय देते हुए कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

उत्तरः

प्रस्तुत पंक्तियाँ द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखा गया है। देशप्रेम, वीरता, प्रकृति चित्रण आदि इस समय के विशेषताएँ है। खड़ी बोली का विकास भी इस काल में हुआ है। साकेत पंचवटी यशोधरा आदि गुप्त जी के प्रसिद्ध रचनायें हैं।

**Chapter -2**

## मुंशी प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, कार्यक्षेत्र, रचनाएँ तथा भाषा शैली

जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन-यापन का अध्यापन से। पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही था। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिरजा रुसबा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी।

1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषय से इंटर पास किया और 1919 में बी०ए० पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ, जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित रहे, जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और 1906 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संतानें हुई – श्रीपत

राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1910 में उनकी रचना 'सोजे-वतन' (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गईं। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा।

इस समय तक प्रेमचंद, धनपतराय नाम से लिखते थे। सन् 1915 ई० में इन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा पर 'प्रेमचंद' नाम धारण करके, हिंदी-साहित्य जगत में पदार्पण किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। अक्टूबर 1936 में उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

## कार्यक्षेत्र

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं। वैसे तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, पर उनकी पहली हिंदी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में, 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से। बीस वर्षों की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत-सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा, चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी', 'जमाना' पत्रिका के दिसंबर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुई। कथा सम्राट प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गाँधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन भार सँभाला, छह साल तक 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन किया, 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक पत्र और निकाला। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की।

## रचनाएँ

प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन किए और एक नए कथा-युग का सूत्रपात किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके वे भारतीयों के हृदय में समा गए और भारतीय साहित्य जगत में 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित हुए।

प्रेमचंद ने कहानी, नाटक, जीवन-चरित और निबंध के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अभूतपूर्व परिचय दिया।

**अ) उपन्यास –** कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम, वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)

**(ब) कहानी संग्रह –** नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, प्रेरणा, कफन, कुत्ते की कहानी, प्रेम-प्रसून, प्रेम-पचीसी, प्रेम-चतुर्थी, मनमोदक, मानसरोवर (दस भाग), समर-यात्रा, सप्त-सरोज, अग्नि-समाधि, प्रेम-गंगा और सप्त- सुमन

**(स) नाटक** – कर्बला, प्रेम की वेदी, संग्राम और रूठी रानी

**(द) जीवन-चरित** – कलम, तलवार और त्याग, दुर्गादास, महात्मा शेखसादी और राम-चर्चा

**(य) निबंध-संग्रह** – कुछ विचार

**(र) संपादित –** गल्प-रत्न और गल्प-समुच्चय

**(ल) अनूदित –** अहंकार, सुखदास, आजाद-कथा, चाँदी की डिबिया, टॉलस्टाय की कहानियाँ और सृष्टि का आरंभ

## भाषा शैली

प्रेमचंद जी की भाषा के दो रूप हैं- एक रूप तो जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिंदी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी भाषा का प्रयोग इन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में किया है। यह भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और

प्रवाहमयी है। यही भाषा प्रेमचंद जी की प्रतिनिधि भाषा है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य की रचना जनसाधारण के लिए की। इसी कारण उन्होंने सरल, सजीव एव सरस शैली में ही अपनी रचनाओं का सृजन किया। वे विषय एवं भावों के अनुरूप शैली को परिवर्तित करने में दक्ष थे। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है-

**(अ) वर्णनात्मक शैली –** किसी पात्र, वस्तु, घटना आदि का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया गया है। नाटकीय सजीवता इनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

**(ब) विवेचनात्मक शैली –** प्रेमचंद जी ने अपने गंभीर विचारों को व्यक्त करने के लिए विवेचनात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग अधिक किया गया है।

**(स) मनोवैज्ञानिक शैली** – प्रेमचंद जी ने मन के भावों तथा पात्रों के मन में उत्पन्न अंतर्द्वद्वों को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

**(द) हास्य-व्यंग्यात्मक शैली** – सामाजिक विषमताओं का चित्रण करते समय इस शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया गया है।

**(य) भावनात्मक शैली** – काव्यात्मक एवं आलंकारिकता पर आधारित इनकी इस शैली के अंतर्गत मानव जीवन से संबंधित विभिन्न भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

## साहित्यिक योगदान

कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद युगांतकारी परिवर्तन करने वाले कथाकार तथा भारतीय समाज के सजग प्रहरी व एक सच्चे प्रतिनिधि-साहित्यकार थे। डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है- "हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। उनकी कहानियों में ऐसी घोर यंत्रणा, दुःखद गरीबी, असप्त दुःख, महान स्वार्थ और मिथ्या आडंबर आदि से तड़पते हुए व्यक्तियों की अकुलाहट मिलती है, जो हमारे मन को कचोट जाती है और हमारे हृदय में टीस पैदा कर देती है।" तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौंप गए, जो गुणों की दृष्टि से

अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित। एक श्रेष्ठ कथाकार और उपन्यास सम्राट के रूप में हिंदी-साहित्याकाश में उदित इस 'चंद्र' को सदैव नमन किया जाता रहेगा।

**शतरंज के खिलाड़ी**

1) इस **कहानी** का **मुख्य पात्र** कौन है ?

इस कहानी का मुख्य पात्र मीर और मिरजा है।

2) इस कहानी में कहानीकार **पराधीन भारत का कौनसा और क्या चर्चा** करते है ?

इस कहानी में कहानीकार पराधीन भारत का एक प्रमुख सत्ता - केंद्र लखनऊ के सामाजिक - राजनितिक वातावरण का चर्चा करते है। जिसमे शासक - वर्ग से लेकर आम जनता का अय्याशी में डूबे रहने के बारे में बताते है।छोटे - बड़े , सभी नाच - गाने , पहनने - ओढ़ने , मनोरंजन - नशे में मस्त है।शासक वर्ग से शुरू हुआ यह अय्याशी जीवन आम जनता को भी लुबा चूका है और अकर्मण्य बना चूका है।

3) उनका **तर्क क्या होता** था ?

उनका तर्क होता था की शतरंज , ताश , गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है और पेचीदा मसलो का सुलझाने की आदत पड़ती है।

4) शतरंज का **खेल खेलने का लाभ** मीर मीरजा क्या बताते हैं ?

मीर मिरज़ा का मानना था कि शतरंज का खेल से बुद्धि तीव्र (तेज) होती है।

5) शतरंज के खिलाड़ी के माध्यम से **प्रेमचंद क्या संदेश** देना चाहते हैं ?

जितना मीर और मिरज़ा अपना दिमाग शतरंज खेलने में लगाते हैं उतना अगर देश के बचाव में लगाते तो यह गुलाम कभी नहीं होता।

6) **कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होगा** - का आशय समझाइए

इस वाक्य में मीर और मिर्जा की शतरंज के प्रति दीवानगी बताई है खेलने मैं इतनी एक आग्रह जितना कि कोई समाधि में योगी न हो।

**7)शतरंज, गंजीफा ,ताश आदि खेलने के प्रति लोगों की क्या धारणा** थी ?

शतरंज, गंजीफा,ताश खेलने के प्रति यह धारणा थी कि इनके खेलने से बुद्धि तेज होती है।

मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को **धन अर्जित करने की क्यों चिंता नहीं** थी?

मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को धन अर्जित करने की चिंता इसलिए नहीं थी क्योंकि दोनों के पास मौरूसी जागिरदारी थी।

8)मोहल्ले के **नौकर चाकर शतरंज के खेल के बारे** में क्या कहते थे ?

मोहल्ले के नौकर चाकर इस खेल को मनहूस खेल बताया करते थे। कहते थे कि यह घर को तबाह कर देता है और इनकी यह आदत किसी और को न लगे।

**9)मिरजा की बेगम कि इस खेल के बारे में क्या धारणा** थी ?

मिरज़ा की बेगम को इस खेल से बहुत द्वेष (गुस्सा) था। इसी कारण वह अक्सर खोज खोज कर अपने पति को डांटा करती थी।

**10) बेगम के सिर दर्द** होने पर **मिरज़ा क्यों नहीं घर के भीतर** आए ?

मिरजा उस समय मीर साहब के साथ शतरंज खेलने में रमे हुए थे इसलिए उन्होंने बुलवाए पर कोई ध्यान नहीं दिया।

**11) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ** आ पहुंचा ?

मिरजा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे। तभी 1 दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछा हुआ आ पहुंचा। मीर साहब के तो होश उड़ गए। घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा दिया की वह घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चले गए। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

12) अ**मीर और मिरजा गोमती के किनारे शतरंज** खेलने का निर्णय क्यों लिया ?

1 दिन मीर साहब के घर एक बादशाही फौज का अफसर उन्हें अपने साथ ले जाने आया इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

13) कहानी में **प्रजा और राजा की स्थिति** कैसी है ?

कहानी में प्रजा और राजा की दुख भरा है। प्रजा विशेष रूप से गाँव में रहने वाले किसानों से कर (पैसे) के रूप में वसूला जाता था और धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शान और शौकत और उनकी मजे में खर्च कर दिए जाते थे और उन्हें गरीब जनता की फिक्र नहीं थी।

**14) मिरजा के चरित्र** का विशेषता बताइए

मिरजा के पास जागीरदारी थी। धन की कोई कमी नहीं थी। मिरजा साहब को न अपने परिवार की चिंता थी और न लखनऊ की जनता की। उन्हें अपने बादशाह के बंदी बन जाने की चिंता भी नहीं थी। वह अपने शतरंज के साथ आराम और सुविधा के साथ रहना चाहते थे। मिरजा का जो व्यक्तित्व सामने आता है वह उनके कायर, संवेदनाहीन ,देश के प्रति उपेक्षा, स्वार्थी और झूठी शान पर जीने वाला दिखते है।

**15) मीर के चरित्र** की विशेषता बताइए

मीर साहब शतरंज खेलने के शौकीन थे। परिवार ,समाज, देश उनके लिए कोई मायने का नहीं था। वे पूरे रूप से विलासी थे शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती थी किंतु फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते थे। मिरजा को उसकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे। मीर का व्यक्तित्व एक बेईमान, कायर, विलासी, झूठे शान में रहने वाले और स्वार्थी व्यक्ति का है।

16) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ पहुंचा?

मिरजा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे तभी एक दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछता हुआ आ पहुंचा । मीर साहब के तो होश उड़ गए घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा दिया कि घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चला गया। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

17) मीर और मिरजा ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय क्यों लिया?

एक दिन मीर साहब के घर एक बार शाही फौज का अवसर उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आया। इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

18)' शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता(महत्त्व) पर विचार कीजिए।

शतरंज के खिलाड़ी' शीर्षक पढ़ते ही हमारे दिमाग में शतरंज खेलते लोगों की तस्वीर उभर जाती है। शतरंज एक दिमागी खेल है जिससे मोहरों(ठप्पा) की मदद से राजनीतिक चाले चलकर खिलाड़ी एक दूसरे को हराने का प्रयास करते हैं। राजनीति में भी इसी प्रकार चाले चलकर सत्ता हथियाने(हड़पना) का प्रयास किया जाता है। 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में मीर और मिरजा अपने समाज और देश के हालातों से कटकर शतरंज खेलने में मगन रहते हैं और इस प्रकार खेलते हैं मानो वे दोनों राजा हो एक दूसरे का राज्य हड़पना चाहते हैं । अंत में वे खेलते खेलते जगड पढ़ते हैं और एक दूसरे की हत्या कर देते हैं ।

यह कहानी बताती है कि मीर और मिरजा दोनों बुद्धिमान तथा बहादुर थे, किंतु फिर भी वे देश के हालातों में ,देश की स्वाधीनता में साथ ना दे कर अपनी विलासिता में डूबे रहते हैं। जिस प्रकार शतरंज के मोहरे बेजान राजा और राज्य को दर्शाते हैं, इसी प्रकार मीर और मिरजा अकर्मण्य बने रहते हैं।

19) मिर और मिरजा की मित्रता के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।

मिर और मिरजा दोनों अच्छे मित्र थे । वह जागीरो के शासक थे तथा बुद्धिमान और बहादुर भी । उनकी मित्रता के सकारात्मक पक्ष से यह हो सकते हैं कि वे दोनों मिलकर यदि अपनी प्रजा की भलाई करते और बुद्धिमानी और बहादुरी को अपने शासक शाह के साथ जोड़ दे तो निश्चित ही वाजिदअली शाह गिरफ्तार नहीं होते और लखनऊ पर अंग्रेजों का शासन नहीं हो पाता। इन दिनों मित्रता से दोनों की शक्ति एक और एक ग्यारह बनकर समाज को मजबूत करती है।

इनकी मित्रता के नकारात्मक पहलू यह है कि दोनों विलासी होने तथा शतरंज मैं मोहर रखने के कारण आलसी हो गए। उन्हें देश और समाज से कोई लेना देना नहीं था। वह कर्तव्य विमुख(बदगुमान) होकर केवल अपने सुख को देखते

रहे जिसका परिणाम वाजिद अली शाह की गिरफ्तारी तथा लखनऊ की बर्बादी निकला।

20) जिसे आजीविका के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता उसके जीवन में कुछ विकृतियां(बिगाड़) आ जाती है" - कहानी के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिए।

व्यक्ति को जीवन जीने के लिए काम करना पड़ता है तथा मेहनत और संघर्ष करना पड़ता है । लेकिन जो व्यक्ति सफल और संपन्न हो जाते हैं ,उन्हें संघर्ष नहीं करना पड़ता। इसलिए उनके पास समय और साधन दोनों होने के कारण उनका समय नहीं गुजरता और वह अलग-अलग शौक पाल लेते हैं । जो जीवन को गलत रास्ते में ले जाता है । मीर और मिरजा दोनों के पास जागीरे थी। इसी कारण में विलासी हो गए और उन्होंने अपने कर्तव्य को अनदेखा कर दिया और शतरंज खेलने लगे और वह आलसी हो गए। वे विवेकहीन (अनुचित) और कायर होकर अपने ही देश का विनाश देखते रहे।

21) 'शतरंज के खिलाड़ी ' कहानी के उद्देश्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी स्वाधीनता आंदोलन के समय की है। यह वह समय था जब देश को बहादुरों कि नहीं बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। लेकिन देश में अनेक नवाब ,छोटे राजा विलासिता में डूबे हुए थे या आपसी झगड़ों में लगे थे जिसके आधार पर यह कहानी लिखी गई है।

शतरंज एक ऐसा खेल है जिसमें बुद्धिमान खिलाड़ी ही जीत सकता है ।

मीर और मिरजा बुद्धिमान है परंतु विलासिता में डूबे हैं । यदि वे अपनी बुद्धिमानी का प्रयोग देश के लिए करते तो हमारा देश पराधीन(निर्भर) नहीं होता। प्रेमचंद यही कहना चाहते हैं कि हमें देश हित के लिए अपना आराम और

विलास को छोड़ देना चाहिए और अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए। लेकिन अमीर और मिर्जा देश और समाज को भूल कर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर अपने मनोरंजन में लगे रहते हैं । उनकी बुद्धि का समाज को कोई हित या उपयोग नहीं होता । प्रेमचंद बताना चाहते हैं कि हमारा देश गुलाम क्यों हुआ ? किन स्थितियों ने अंग्रेजों को बढ़ावा दिया? एक वर्ग की दुष्ट प्रवृत्ति(झुकाव) और गलत मानसिकता न केवल दूसरे वर्ग को प्रभावित करती

है लेकिन देश के लिए भी घातक हो सकता है इसका परिणाम आने वाले अनेक पिंडियों को भुगतना पड़ सकता है । मिर और मिरजा जैसे लोग आपस में लड़कर अपनी बहादुरी दिखाते हैं लेकिन देश के लिए अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ कर बैठ जाते हैं।

22) भारत में स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के महत्व पर विचार कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी" कहानी जिस युग के संदर्भ में रची गई है। उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था तथा स्वाधीनता आंदोलन जोरों पर था। ऐसे समय में देश को साहसी और बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। शतरंज बुद्धिमान का खेल है, वे राजनीति अच्छे से समझ सकते हैं तथा देश की स्वतंत्रता में योगदान दे सकते हैं। इस

समय भारत के शासन में नवाबों और छोटे राज्यों की भागीदारी थी ,लेकिन वे लोग अपने भोग विलास में उलझे हुए थे। मिरजा और मिर जैसे लोग बुद्धिमान थे। यदि वे अपने दिमाग को देश को बचाने के लिए लगाते तो देश को गुलाम होने से बचाया जा सकता था।

प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े नेता और जनता को यह सीख दी है कि देश और स्वतंत्रता वह जन कल्याण के लिए हमें अपने सुख चैन और विलासिता को दूर रख कर देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। अमीर और मिर्जा अपने दायित्व और समाज के विलासिता का प्रतीक है। पर बुद्धि मानते लेकिन समाज और राष्ट्र के लिए उनकी बुद्धि का कोई उपयोग नहीं था। व्यक्ति का कोई भी शक्ति ,कोई भी कार्य तब तक सकारात्मक नहीं कहा जा सकता जब तक वह समाज के लिए उपयोग में ना आए ।

प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा जनता को चेतावनी दी है कि किन परिस्थितियों के कारण हम गुलाम है और यदि हमें विदेशी शासन से मुक्त होना है तो अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठना होगा और संघर्ष करना होगा। वे कहते हैं कि हमें संकल्प करना होगा कि पहले देश का हित होगा बाकी सब बाद में तभी हमें स्वतंत्रता मिलेगी।

23) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में व्यक्त वातावरण की तुलना आज के वातावरण से करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' का वातावरण उस समय का है, जब देश अंग्रेजों का गुलाम था। वे जनता और शास्त्र( शिक्षा देना) को सभी पर अत्याचार करते थे। नवाब और राजा और जनता सभी विलासिता में डूबे हुए थे। किसी को भी देश की चिंता नहीं थी ।कोई नाच गाने में डूबा था तो कोई नशे में डूबा था। शासन, साहित्य, सामाजिक स्थिति, उद्योग, व्यवहार सभी में विलासिता मे डूबे थे। विदेशी शासकों के कारण देश की जनता को किसी प्रकार की आजादी नहीं थी । सभी को उनका हुकुम मानना पड़ता था।

आज का वातावरण उस समय से अलग है, आज हम स्वतंत्र है, अपने तरीके से जीवन जी सकते हैं । सुख सुविधा मौजूद है । किसी प्रकार का अत्याचार होने पर हम कानून का मदद ले सकते हैं। लोकतंत्र में खराब शासक को हटाने का अधिकार जनता रखती है। परंतु यह सब होते हुए भी भ्रष्टाचार है। शासक, नेता, सरकारी अधिकारी और जनता देश हित को छोड़कर अपनी निजी स्वार्थ में लगे हुए हैं । जिसका नतीजा है गरीबी, कुशासन, आतंकवाद, बेरोजगारी, महंगाई। यह सच है कि आज हम विदेशी शासन के गुलाम नहीं है, लेकिन नेताओं के स्वार्थ के कारण विदेशी निवेश धीरे-धीरे अपना पाव जमाते जा रहे हैं जो देश की स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है।

24) मिरजा और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

मिरजा सज्जाद अली और मीर रौशन अली 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के मुख्य पात्र हैं। दोनों के पास जागीरदारी थी । वे दोनों मित्र थे। पिता की संपत्ति के कारण उनके पास धन की कमी नहीं थी। इसी कारण दोनों

काम छोड़ विलासी और कायर हो गए।

मिरजा साहब को ना अपने परिवार की चिंता थी ना लखनऊ की जनता कि ।उन्हें अपने बादशाह के बंदी(क़ैदी) बन

जाने का भी चिंता नहीं था। वह अपनी शतरंज के साथ अपने आराम में लगे थे। वह अपनी सुविधा और सुख नहीं छोड़ना चाहते थे।

लखनऊ की बिगड़ती हालत का उन पर कोई असर नहीं था ।

मीर साहब को भी मिरजा की तरह शतरंज खेलने और पान हुक्के से प्यार था। परिवार, समाज, देश उनके लिए कोई मायने नहीं रखते थे। वह पूरे विलासी थे। शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती लेकिन फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते। वह मिरजा को उनकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे।

Chapter - 3

## जीप पर सवार इल्लियाँ

## शरद जोशी का जीवन परिचय

शरद जोशी ने सामाजिक परिवर्तनों, राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल को बड़ी बारीकी से समझा और देखा था। शरद जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहरा असर पड़ा। शरद जोशी वर्तमान व्यवस्था से बहुत क्षुब्ध थे। वे स्वयं कदम-कदम पर दिखने वाले व्यवस्था के खोखलेपन को एक पल भी सहने के लिए तैयार नहीं होते थे। वे हमेशा व्यवस्था को बदलने की भावना एवं विचारों से उद्वेलित रहते थे। उनके विचारों में गहरा सच्चा और खरा अनुभव झलकता था। गहरे चिंतन मनन और परीक्षण के बाद उन्होंने अपनी आस्थाओं की बुनियाद डाली थी। विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता की सेवा की।

परिवार क्रम उज्जैन नगरी मालवा की संस्कार धानी है। यह महाकालेष्वर की पवित्र भूमि है यह भूमि साहित्य के लिए उर्वरा

रही है। साहित्य के कई अनमोल रत्नों को इस भूमि ने जना और तराशा है। व्यंग्य कार और हिन्दी व्यंग्य के षिकार पुरुष व्यंग्यार्शि शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1931 को हुआ था।
शरद जोशी के पिता श्री निवास जोशी मध्य प्रदेश रोडवेज में डिपों मैनेजनर के पद पर कार्यरत थे। शरद जोशी की माता-का नाम शांति था। उनके परिवार में शरद जोशी को मिलकर कुल 6 भाई-बहन थे। शरद जोशी की मृत्यु 5 सितम्बर 1991 मुंबई में हुई।

अपने परिवार के बारे में जानकारी देते हुए स्वयं शरद जोशी ने लिखा है- ‘‘हम कुल छः भाई-बहन हैं। सब एक-दूसरे से प्रकृति में अलग हैं। छोटे थे तो मारपीट करते थे। अब एक-दूसरे को बेवकूफ समझते हैं। सबका अपना व्यक्तित्व है, अपनी भाषा और अपना कार्यक्षेत्र। मेरी बड़ी बहन पार्थिव पूजे बिना खाना नहीं खाती और मेरे सामने कोई ईश्वर का नाम ले लें, तो मूड ऑफ हो जाता है।’’ शरद जोशी के पिता सरकारी नौकरी में थे। वे जब तक शहर में अपने पाँव जमाते थे तब तक किसी दूसरे शहर में उनका तबादला हो जाता था।

शरद जोशी का परिवार मूलतः गुजराती परिवार है। इनका परिवार चार पीढ़ियों पहले गुजरात से मालवा आया था और इस परिवार में मालवी संस्कृति को अपने भीतर आत्मसात कर लिया था शरद जोशी के दादा, परदादा, उज्जैन में ही रहे।

‘शरद जोशी’ के बचपन का नाम ‘बच्चू’ था। उनके पिता श्री निवास जोशी उस समय रोडवेज में डिपो मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। विभागीय कर्मचारियों का एक बहुत बड़ा हिस्सा उनकी देख-रेख में था कर्मचारी उन्हें बच्चू को छोटे मैनेजर साहब कहते थे। उनके दादा परदादा यहीं के बाशिंदे थे। शरद जोशी के पिता स्वयं सरकारी नौकरी में थे इसीलिए उनकी इच्छा थी कि घर का बड़ा बेटा यानी शरद जोशी भी सरकारी नौकरी करें।

शरद जोशी का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ था जहां जात-पांत और कर्मकाण्ड को बहुत ज्यादा महत्त्व दिया जाता था। उनके घर का का माहौल काफी अनुशासित था। कर्मकाण्डों ब्राह्मण परिवार में छुटपन में घर पर उनको कठोर नियंत्रण में रखा जा रहा था। शरद जोशी से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वह दिन रात-खूब पढ़ाई करके क्लास में अब्बल आएं। उन्हें कोर्स के अतिरिक्त पुस्तकें पढ़ने की घर में इजाजत नहीं थी।

उन्होंने बचपन में प्रेमचन्द, शरदचन्द्र व देवकी नन्दन खत्री की पुस्तकों को अपने घरवालों से छुपाकर पढ़ा था। घर के बंदिशों वाले माहौल में वे एक प्रकार की घुटन महसूस किया करते थे। उन्हें अपने घर का माहौल किसी जेलखाने से कम नहीं लगता था। तब किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि जिस बच्चू को बचपन में कठोर अनुशासन और बंदिशों के बीच रखा गया है वह बड़ा होकर शरद जोशी के रूप में हिन्दी व्यंग्य साहित्य का महान लेखक साबित होगा।

शरद जोशी स्वभाव से हंसमुख, दृढ़-निष्चयी तथा स्वाभिमानी थे। पढ़ाई के सिलसिले में वे कभी उज्जैन, कभी नीमच कभी देवास, कभी महू तो कभी इंदौर भटकते रहे। शरद जोशी के शौक और व्यसन करीब-करीब एक जैसे थे। उन्हें किताबें पढ़ना-घूमना, बातचीत करना, पैसे खर्च करना, लिखना और खूब लिखते रहने का शौक था। शरद जोशी बचपन से लिखते रहे थे। जोशी के परिवार में पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ भी पढ़ने या लिखने की इजाजत नहीं थी शरद जोशी इस मामले में विद्रोही प्रकृति के साबित हुए।

उन्होंने बचपन से ही जमकर लिखना शुरू कर दिया। लिखने के शौक को घरवालों से छुपकर पूरा किया। बचपन में ही उनके लेख अखबारों और पत्रिकाओं में छपने लगे। कुछ समय "छदम्" नाम से भी लिखा। दोस्तों के साथ मिलकर हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकाली शरद जोशी ने अपनी पहली कमाई लेखन से ही की थी। उन्होंने एक अखबार में लेख लिखा था, और उन्हें मेहनताना मिला था। 1953 में शरद जोशी ने इदौर के दैनिक अखबार 'नई दुनिया' में एक स्तंभ लिखना शुरू किया।

शरद जोशी कहते हैं- "जब मैं नई दुनिया इंदौर में सप्ताह में तीन की गति से कॉलम लिखताथा मुझे तीस रूपए प्रतिमाह मिलते थे अर्थात् माह में बारह कॉलम के प्रति कॉलम ढाई रूपए। कहानी लिखने पर बारह रूपए से बीस रूपया तक प्राप्त होते थे।" 1953 में उन्होंने नई दुनिया इंदौर में "परिक्रमा" नामक स्तंभ लिखना शुरू कर दिया और एक युवा व्यंग्यकार के रूप में उभरे। 1957 में इन्हीं लेखों का संग्रह परिक्रमा के नाम से ही प्रकाशित हुआ। शुरूआती दौर में उन्होंने कहानियां भी लिखीं। 1955 में वे आकाशवाणी इंदौर में पांडुलिपि लेखक के रूप में काम करने लगे। 1956-66 के दौरान उन्होंने म0 प्र0 सूचना विभाग में सरकारी नौकरी की।

1960 के दषक में उन्होंने साप्ताहिक 'धर्मयुग' में "बैठे ठाले," स्तंभ लिखना शुरू किया और व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में उनका नाम महत्त्वपूर्ण हो गया। 1980 में वे 'हिन्दी एक्सप्रेस के संपादक बने लेकिन यह पत्रिका चल नहीं पाई। 1985 से वे नवभारत टाइम्स में 'प्रतिदिन' स्तंभ लिखते रहे। इससे पहले 'रविवार' दिनसार और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने व्यंग्य लिखे।

शरद जोशी यथार्थवादी थे। उन्होंने सत्य स्थितियों से कभी मुंह नहीं मोड़ा वे अपने परिवार, मित्र लेखन, मंचीन पाठ तथा समाज के प्रति बेहद ईमानदार थे। वे बहुत ज्यादा संवेदनशील थे। उनके अनुभवों का आकाश बड़ा बिषाल था। इसलिए उनका स्वभाव भी सरल था। वे सच्चे प्रगतिशील थे। अपने जीवन में जितने साहसी निर्णय शरद जोशी लिए, उतना साहसी कदम उठाने की क्षमता बहुत कम लोगों में होती है। जो गलत हैं, उसे गलत कहने की हिम्मत शरद जोशी हमेशा जुटाए रहे। शरद जोशी का जन्म भले ही भरी गर्मियों में हुआ लेकिन हिन्दी साहित्य में शरद जोशी शीतल और मन को मोहने वाली बयार बनकर सबको हर्षित करते रहे। वे आजीवन लेखन के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

आमतौर पर शरद जोशी अपनी किताबों में आत्मकथ्य, भूमिका या दो शब्द लिखना पसन्द नहीं करते थे। "जादू की सरकार" में उन्होंने अपने लेखन के बारे में लिखा है, "लिखना मेरे लिए जिन्दगी जी लेने की एक तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो इतने वर्षों जी लिया। यह एक मुझे बढ़िया बहाना मिल गया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता, अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा एक निजी उद्देश्य है। कोई अब मुझे इससे बचा नहीं सकता मैं इससे बचकर जी भी नहीं सकता। चूंकि यह मेरे जीवन जीने का सहारा रहा है, इसलिए मेरी इससे कोई शिकायत नहीं है। मेरी सारी शिकायत स्वयं से अपने जीवन से और निरंतर लड़खड़ाते भाग्य से हो सकती है और प्रायः बेसबब हंस देने की आदत न होती तो शिकायत करता भी या उससे अधिक भी कुछ करता। पर धीरे-धीरे यह सब भी हंस कर टाल देने का मामला बन गया है, अब जीवन के आगे किसी प्रकार का विशेषण लगाना मुझे अजीब लगता है। चढ़-बढ़ कर यह कहा कि जीवन संघर्षमय रहा लेखक होने के कारण जिसे मैंने दु:खी-सुखी जिया, फिजूल है। जीवन होता ही संघर्षमय है। किसका नहीं होता ? लिखने वाले का होता है तो क्या अजब होता है।

## शरद जोशी की रचनाएँ

हिन्दी व्यंग्य साहित्य को शिखर तक पहुँचाने वाले व्यंग्यार्शि शरद जोशी का समस्त साहित्य व्यंग्यमय है। उन्होंने कहानी उपन्यास, निबंध और नाटक लिखे, सभी रचनाओं में व्यंग्य का निर्वाह किया। उन्होंने अपने व्यंग्य लेखन के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक और प्रशासन की विकृतियों का पर्दाफाश किया है। एक तरफ से शरद जोशी का नाम तल्ख व्यंग्य का पर्याय बन गया। शरद जोशी की प्रकाशित कृतियाँ हैं-

1. परिक्रमा
2. किसी बहाने
3. जीप पर सवार इल्लियाँ
4. रहा किनारे बैठ
5. तिलस्म
6. दूसरी सतह
7. पिछले दिनों
8. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
9. यथासंभव
10. यथासमय
11. हम भ्रश्टन के भ्रष्ट हमारे
12. मुद्रिका रहस्य

13. दो व्यंग्य नाटक
14. जादू की सरकार
15. मैं, मैं और केवल मैं
16. प्रतिदिन
17. प्रतिदिन (समग्र तीन खण्ड)
18. यत्र तत्र सर्वत्र
19. झरता नीम, शाश्वत थीम
20. नाटक के तीर
21. भारत में जातिवाद एवं अन्य निबन्ध (अनुवाद)

शरद जोशी की अन्य रचनाएं "दूध पीने की कला", "कोई एक आएगा", "खतरा", "'ट्रिक'", जिसके हम मामा हैं, बिना शीर्शक, "संदेह से घिरी शराफत", "बदतेदिल" और "सोफों की ट्रेजेडी", शर्म- तुमको मगर आती है, "खोखला घर", बौद्धिक असहमति, अतृप्त आत्माओं की रेल यात्रा, तिलिस्मा मुद्रिका रहस्य, बुद्ध के दांत' हिटलर और आंचू तबाखू वाला, भगवान और मुर्गा, वर्जीनिया तुल्फ से सब डरते हैं, पुलिया पर बैठा आदमी, सारी बहस से गुजरकर, और 'कैसा जादू डाला', भी महत्त्वपूर्ण कहानियां हैं।

शरद जोशी ने लघु कथाएं भी लिखी हैं। शरद जोशी ने अपनी कहानियों में बहुत कम ही सही, पर ऐतिहासिक मिथकों का भी सहारा लिया है। शरद जोशी ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर भी कहानियाँ लिखते नजर आते हैं।

व्यंग्यकार सतत् जागरूक रहकर अपने परिवेश पर, जीवन और समाज की हर छोटी-सी-छोटी घटना पर तटस्थ भाव से दृष्टिपात करता है और उसके आभ्यंतरिक स्वरूप का निर्मम अनावरण करता है। इसीलिए व्यंग्यकार का धर्म अन्य विधाओं में लिखने वालों की अपेक्षा कठिन माना गया है, क्योंकि अपनी रचना प्रक्रिया में उसे बाह्य विषयों के प्रति ही नहीं, स्वयं अपने प्रति भी निर्मम होना पड़ता है। हिन्दी के सुपरिचित व्यंग्यकार शरद जोशी का यह संग्रह इस धर्म का पूरी मुस्तैदी से निर्वाह करता है। धर्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण - कुछ भी यहाँ लेखक की पैनी नज़र से बच नहीं पाया है और उनकी विसंगतियों का ऐसा मार्मिक उद्‌घाटन हुआ है कि पढ़ने वाला चकित होकर सोचने लगता है - अच्छा, इस मामूली सी दिखने वाली बात की असलियत यह है वास्तव में प्रस्तुत निबंध-संग्रह की एक-एक रचना शरद जोशी की व्यंग्य-दृष्टि का सबलतम प्रमाण है।

प्रश्न 1.

खेतों में इल्ली लगने का क्या कारण बताया?

उत्तर:

मौसम खराब रहने, वर्षा अधिक होने और ठंड बढ़ जाने से खेतों में इल्ली लग गयी।

प्रश्न 2.

लेखक को कृषि अधिकारी कहाँ ले गए?

उत्तर:

लेखक को कृषि अधिकारी इल्ली उन्मूलन की प्रगति दिखाने खेतों में ले गये।

प्रश्न 3.

किसान कब और क्यों घबराया?

उत्तर:

किसान छोटे अफसर के क्रोध को देखकर और खेत में इल्ली लगने का दोषी मानने पर घबराया उसे लगा कि उसका खेत जब्त हो जायेगा

प्रश्न 4.

अन्न की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है-

(क) इला को

(ख) इल्ली को

(ग) नष्टार्थी देवी को

(घ) कृषि विभाग की गोष्ठी को

प्रश्न 5.

"मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शान्ति है, सुख है।" किसने कहा-

(क) किसान ने

(ख) छोटे अफसर ने

(ग) बड़े अफसर ने

(घ) लेखक ने

उत्तर:

4. (क) 5. (ग)

प्रश्न 6.

पाठ के लेखक का नाम बताइए।

उत्तर:

पाठ के लेखक का नाम शरद जोशी है।

प्रश्न 7.

इल्लियों को किसकी पुत्री बताया गया है?

उत्तर:

इल्लियों को इला अर्थात् पृथ्वी की पुत्री बताया गया है।

प्रश्न 8.

किसान को जीप में क्या रखने को कहा गया?

उत्तर:

किसान को जीप में हरे चने की बूट रखने के लिए कहा गया।

प्रश्न 8.

जीप पर सवार तीन झल्लियाँ किन्हें बताया गया है?

उत्तर:

लेखक, बड़ा अफसर तथा छोटा अफसर-इन तीनों को जीप पर सवार इल्लियाँ बताया गया है।

प्रश्न 9.

अखबारों में किसकी तस्वीर छपी हुई थी ?

उत्तर:

अखबारों में चने के पौधे पर लगी इल्ली की सुन्दर तस्वीर छपी हुई थी।

प्रश्न 10.

कौन किसकी कमाई खाकर पब्लिसिटी लूट रही थी?

उत्तर:

इल्लियाँ अपनी जन्मदात्री पृथ्वी की कमाई खाकर अर्थात् चने की पौध को चटकर पब्लिसिटी लूट रही थीं।

प्रश्न 11.

अफसर को कौन-सी कविता याद थी?

उत्तर:

अफसर को मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित ग्रामजीवन पर लिखी गई कविता याद थी।

प्रश्न 12.

बड़े अफसर ने खेत में चहलकदमी करते हुए लेखक से क्या कहा?

उत्तर:

बड़े अफसर ने लेखक से कहा कि उसे खेतों में चहलकदमी करना अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन, शान्ति और सुख है।

renaissance
renaissance